Wisdom Vortex:
International Journal of Social Science and Humanities

Open-access, Peer Reviewed, Refereed, Quarterly Journal, Multiple Language (English & Hindi)

e-ISSN: 3107-3808
p-ISSN: Applied for

Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities, Volume: 02, Issue: 02, July-Sep 2026

How to cite this paper:
Sharma, E. & Sahu, R. M. (2026). Prachin Bharat me Yuddh aur Vishwa Shanti par Kautilya ke Vicharon ka Aitihasik Vishleshan. *Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities, 2*(2), 21-30. https://doi.org/10.64429/wvijsh.02.02.022

Received: 28 May. 2026
Accepted: 24 June. 2026
Published: 10 July. 2026

Copyright © 2026 by author(s) and Wisdom Vortex: International Journal of Social Science and Humanities.
This work is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY- 4.0).
https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

OPEN ACCESS

प्राचीन भारत में युद्ध और विश्व शांति पर कौटिल्य के विचारों का ऐतिहासिक विश्लेषण

एकता शर्मा [1]

डॉ० रश्मि माला साहु [2]

सारांश

राजनीतिक चिंतन के इतिहास में प्राचीन भारत का प्रमुख स्थान है। प्राचीन काल में हिंदू शासको ने न केवल राज्य की विधि व्यवस्था को सुदृढ़ और सशक्त बनाने का प्रयास किया बल्कि दूसरे राज्यों के साथ शांतिपूर्ण संबंध बनाने के भी नीति अपनाई थी जिसमें विभिन्न प्रकार की कूटनीतियों, संधि, समझौते एवं पर राष्ट्रों के साथ संबंधों की स्थापना की जाती थी। युद्ध का प्रयोग अंतिम शस्त्र के रूप में होता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने कहा है कि भारत में युद्ध का पूरे देश पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता था। प्राचीन धर्म ग्रंथ एवं स्मृतियां इस बात की साक्षी है कि जब कोई राजा यह अनुभव करता कि उसकी सेना शत्रु राज्यों की अपेक्षा अधिक बलवान और उत्साही है तो वह युद्ध की घोषणा कर देता था। किसी भी देश का राजा अपने साम्राज्य का विस्तार करने हेतु युद्ध का सहारा लेता था परंतु उसका यह अर्थ नहीं है कि प्राचीन काल के चिंतकों ने विभिन्न राज्यों के बीच युद्ध को त्याग कर सद्भावपूर्ण संबंध स्थापित करने और शांति स्थापित करने की ओर ध्यान नहीं दिया। अधिकांश भारतीय चिंतकों ने युद्ध के परित्याग का संदेश दिया और विश्व शांति स्थापित करने के बीज बोए हैं। इस दिशा में भारतीय राजनीतिक चिंतक महर्षि कौटिल्य के विचारों को नकारा नहीं जा सकता है। भारतीय राजनीतिक इतिहास में कौटिल्य विलक्षण प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र में विभिन्न राज्यों के बीच परस्परिक संबंध, राजनय , विदेश नीति, कूटनीति आदि पर विचार प्रकट किया है। वह एक यथार्थवादी और व्यावहारिक राजनीति का प्रणेता है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों पर प्रकाश डाला है। अन्य भारतीय चिंतकों के समान कौटिल्य भी विभिन्न राज्यों की पारस्परिक संबंधों के दो आधार युद्ध और संधि बताते हैं। कौटिल्य ने युद्ध संबंधी विषयों जैसे युद्ध के अवसर, युद्ध के औचित्य, युद्ध के नियमों, युद्ध क्रिया आदि सभी पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। दूसरी ओर, कौटिल्य ने पर राष्ट्र संबंध स्थापित करने के लिए मंडल सिद्धांत

[1] शोधार्थी, नेट उत्तीर्ण, राजनीति विज्ञान विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड)

[2] वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्षा, सेवानिवृत्त, स्नाकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, निर्मला कॉलेज, रांची विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड)

और षड्गुण्य नीति का उल्लेख किया जिसमें विश्व शांति की झलक दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारत में युद्ध और विश्व शांति पर कौटिल्य के विचारों का विश्लेषण किया गया है।

विशिष्ट शब्द: *कूटनीति, संधि, युद्ध, शांति, अर्थशास्त्र, अंतरराष्ट्रीय संबंध, मंडल सिद्धांत, षड्गुण्य नीति*

प्राचीन भारत में युद्ध क्षेत्रों पर कब्जा करने या शासकों को हराने का मुख्य साधन था, जिसे कई राज्यों, गणराज्यों और साम्राज्यों में विभाजित किया गया था। युद्ध एक राजनीतिक संस्था है और एक आवश्यक बुराई है। युद्ध शब्द के सुनते ही हम में से अधिकांश लोगों के मस्तिष्क में एक ऐसी स्थिति का चित्र बन जाता है जिसमें रुधिर बहता हो, विध्वंश हो रहा हो, शारीरिक हिंसा तथा विनाश हो, सेनाएं परस्पर पर टकराती हो, सड़कों पर खचाखच शरणार्थी भर चले आते हो, नगर टूटे पड़े हो और समुद्र की सतह पर तेल बह रहा हो। युद्ध की कोई सटीक परिभाषा नहीं है। लेनिन के अनुसार,"चारों मोर्चे अथार्त सैनिक, आर्थिक ,राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक एक ही युद्ध के अविच्छिन भाग है।" ऐसे युद्ध के जो दृढ़ निश्चय तथा नृशंसता के साथ निरंतर चलता रहता है, जो कभी रक्त पूर्ण होता है, तो कभी रक्त हीन, कभी हिंसात्मक तो कभी और अहिंसात्मक, कभी सैनिक तो कभी आर्थिक, कभी शिक्षा के क्षेत्र में चलता है तो कभी शासन प्रबंध के क्षेत्र में। इसका एक मात्र अभिप्राय यह है कि युद्र पुराने समाज की शक्तियों और परंपराओं को नष्ट कर देता है।

युद्ध क्या है ? यह समझना कठिन नहीं। युद्ध निर्मम और चमत्कारिक ढंग की ऐसी मार काट है जिसे आप अनुभव कर सकते हैं, जिसको आप अपनी आंखों से देख सकते हैं और इसलिए उसमें आप आसानी से सहयोग भी दे सकते हैं, लेकिन शांति इतनी आसानी से समझ में आने वाली बात नहीं है। वह एक मुक , निराशा और निरंकार प्रस्ताव है।

विश्व शांति क्या है ? विश्व शांति पृथ्वी पर सभी लोगों और राष्ट्रों के भीतर और उनके बीच शांति की एक आदर्श स्थिति की अवधारणा है।[1] विश्व शांति केवल आंतरिक साधनों के माध्यम से प्राप्त की जाती है - खुद को उन कृत्रिम सीमाओं से मुक्त करके जो हम सभी को अलग करती हैं। आज हम एक नए विश्व व्यवस्था की बात कर रहे हैं और महसूस कर रहे हैं कि युद्ध की भावना को रक्षा से भी अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। इस नए दृष्टिकोण के बावजूद जिसमें वैश्विक मानसिकता का विकास शामिल है प्रत्येक देश या तो युद्ध में है या युद्ध की तैयारी की स्थिति में है। इसका अर्थ यह है कि हम युद्ध की भावना को पूरी तरह से त्यागने में असमर्थ हैं।

भारत में युद्ध एवं विश्व शांति का इतिहास

भारत में युद्ध और शांति का इतिहास क्या है? क्या प्राचीन भारतीय इतिहास में युद्ध की स्थिति सामान्य थी या शांति का माहौल था? चुकी इतिहास राजनीति का पक्षपाती है और कहीं ना कहीं इतिहास के पन्ने प्राचीन भारत के अतीत की यादों को शांतिपूर्ण और अहिंसक स्वर्ण युग के रूप में सामने लाते हैं। अक्सर यह माना जाता है कि यह स्वर्ण युग 'हिंदू भारत' पर 'मुस्लिम आक्रमण' के बाद समाप्त हो गया।[2] प्राचीन भारत ने हर युग में कई युद्ध देखे हैं चाहे वह सत्य युग, त्रेता युग हो, द्वापर युग हो अथवा कलयुग हो। कुछ प्रसिद्ध युद्ध में दस राजाओं का युद्ध त्रेता युग में राम और रावण के बीच युद्ध तथा द्वापर युग में कुरुक्षेत्र युद्ध शामिल थे। इसके अलावा विभिन्न पुराणों में अन्य युद्धों का भी उल्लेख किया गया है।

प्राचीन समय में संपूर्ण भारत एक राजनीतिक सूत्र में बंधा हुआ था। लोगों में मातृभूमि और धर्म भूमि मानने की भावना विद्यमान थी। जनता सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बंधे थे परंतु मौर्य काल , गुप्त काल तक आते-आते देश की एकता का अभाव होने लगा। छोटे-छोटे जनपद तथा राज्यों का अस्तित्व था परंतु वे भी संघर्ष के दौड़ भी शामिल हो गए। वैदिक काल से ही सम्राट बनने की होड़ मची थी। (ऋग्वेद 8/19/32) वैदिक साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल से ही अन्य राजाओं को वश में करना, राज्य अपने अधीन करके सम्राट बनने के विचार का विकसित होना प्रारंभ हो गया था। वैदिक और उत्तर वैदिक युगों की राजनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व था कि अन्य राजाओं का उच्चेदन किया जाए, केवल उनसे अधीनता ही स्वीकृत कर ली जाए। युद्ध राजनीतिक नहीं बल्कि धार्मिक कर्तव्य भी बन जाता था। क्षत्रियों के लिए राज्य रक्षा एवं राज्य विस्तार के लिए युद्ध का अनुमोदन किया जाता था। अवसर उपस्थित होने पर क्षत्रिय युद्ध विमुख हो सकता था क्योंकि युद्ध छात्र-धर्म था। (गीता 2/31) धर्मयुद्ध जिसका अर्थ है अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सर्वमान्य नियमों के आधार पर युद्ध करना।[3] धर्म युद्ध की सैद्धांतिकता एवं उनके दृष्टिकोण के विरुद्ध राष्ट्र संघ में युद्ध को अंत स्तर का अपराध माना गया है जबकि गीता में कहा गया है कि अपराध की कोई नैतिक पृष्ठभूमि भी हो सकती है। (गीता2/33)

बौद्ध धर्म और जैन धर्म, अहिंसा की वकालत करने के बावजूद, प्रचलित राजनीतिक व्यवस्था में युद्ध और युद्ध की भूमिका को भी समझते थे और विशेषकर आक्रमणकारियों से अपने राज्य की रक्षा के लिए दिग्विजय का मार्ग अपनाया जाता था। अपने सभी मानवीय कार्यों के साथ-साथ, मौर्य सम्राट अशोक (272-232 ईसा पूर्व) ने भी अपनी सेना को भंग नहीं किया, बल्कि

अपने लोगों की सुरक्षा के लिए कुशल साधन बनाए रखना जारी रखा।[4] वैदिक साहित्य, दो प्रमुख महाकाव्य रामायण और महाभारत, कौटिल्य का अर्थशास्त्र (लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) और बाणभट्ट का हर्षचरित, प्राचीन भारत में युद्ध के संबंध में सभी प्रमुख ग्रंथ हैं जो इसके उदारहरण हैं।

प्राचीन काल से ही शांति एवं सद्भाव भारतीय संस्कृति की मूल विशेषताएं रही हैं। वैश्विक शांति स्थापित करने में भारत सदैव अग्रणी देशों में शामिल रहा है। प्रारंभ से ही भारत में अनेक धर्म रहे हैं। इन धर्मो ने दुनिया भर में शांति एवं मानवता का संदेश दिया। "वसुधैव कुटुंबकम" की अवधारणा हिंदू धर्म की प्रमुख विशेषता रही है।

अयं निजः परः वा इति गणना लघुचेतसाम् |
उदार चरिताणां तु वसुधा एव कुटुम्बकम ||[5]

अर्थात् केवल नीच बुद्धि वाले ही यह सोचते हैं कि कोई अपना है या पराया; उत्तम आचरण वाले लोग पूरे विश्व को अपना परिवार मानते हैं। (ऋग्वेद)

बौद्ध एवं जैन धर्म ने दुनिया भर में अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया। सल्तनत काल, मुगल काल एवं ब्रिटिश काल में भी भारत ने सहिष्णुता को ही बढ़ावा दिया। भारत ने बाहर से आयी संस्कृतियों को भी अपने में समाहित किया। विभिन्न धर्मों के असंख्य संप्रदायों ने भी सदैव शांति एवं सद्भाव स्थापित करने की दिशा में न सिर्फ सैद्धांतिक विचारों का प्रतिपादन किया बल्कि सक्रियतापूर्वक आम जनमानस में उसका प्रचार प्रसार भी किया।[6] उपनिवेश काल में भी भारत ने संपूर्ण विश्व को शांति का संदेश दिया। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्व शांति पर भाषण दिया। अंग्रेजों की गुलामी सहते हुए भी भारतीय विद्वानों ने विश्व शांति के बीज बोए। भारत ने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए महात्मा गांधी के नेतृत्व में कई अहिंसक आंदोलन भी किए, जो सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के रास्ते पर चला और पूरी दुनिया को सत्य एवं अहिंसा का पाठ पढ़ाया। आज गाँधी की 'सर्वोदय' की अवधारणा समस्त विश्व के समक्ष विकास का एक समावेशी मॉडल है। महात्मा गांधी के विचारों की उपयोगिता और प्रभाव को देखते हुए प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर, उनके जन्म दिवस पर अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध और शीत युद्ध के दौर में भारत में पूरी दुनिया को शांति और भाईचारे का संदेश दिया। भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई और दूसरी ओर पंचशील के सिद्धांतों को अपनाया जो विश्व को शांतिपूर्ण बनाने में सहयोग देता है।

भारत के प्राचीन ग्रंथो के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल में हिंदू शासको ने न केवल राज्य की विधि व्यवस्था को सुदृढ़ और सशक्त बनाने का प्रयास किया बल्कि दूसरे राज्यों के साथ उत्तम और मित्रवत संबंध स्थापित करने के लिए अनेक नीतियों को अपनाया था। इसके लिए दूसरे राज्यों के साथ मित्रता पूर्ण संबंध स्थापित किया और आवश्यकता पड़ने पर विद्रोह भी किया। मनुस्मृति में इस बात का संकेत मिलता है कि जब कोई राजा या अनुभव करता है कि उसकी सेवा शत्रु राज्यों की अपेक्षा अधिक बलवान और उत्साही है तो वह युद्ध की घोषणा कर देता था। दूसरी ओर कुछ ऐसे भी उदाहरण है जो युद्ध को त्याग कर शांति के संदेश को फैलाने की बात करते हैं। सम्राट अशोक ने राजकुमार महेंद्र और राजकुमारी संघमित्रा को शांतिदूतों के रूप में विभिन्न देशों के साथ मित्रवत एवं सद्भावना पूर्व संबंध स्थापित करने के लिए भेजा था। भारतीय इतिहास में कुछ इस प्रकार के उदाहरण है जो युद्ध के स्थान पर शांति की बात करते हैं। मनुस्मृति और कामन्दक के नीतिसार में युद्ध नहीं अपनाने की शिक्षा दी गई है। मनुस्मृति में कहा गया है," विजेतु प्रयतेतारीन्न युद्धयेत कदाचन।" इसी प्रकार कामंदक नीतिसार में कहा गया है कि "नाशो भवति युद्धने कदाचिदुभयोरपि।" महाभारत में भी युद्ध को त्यागने का संदेश दिया गया है "वर्जनीय सदा युद्ध राजीकामेन धर्मिता।" महाभारत में इसकी पुष्टि मिलती है कि युद्ध आरंभ होने के पूर्व पांडवों की ओर से शांति वार्ता के लिए श्री कृष्ण शांति दूध के रूप में भेजे गए थे।

प्राचीन काल के हिंदू शास्त्रों में दो प्रकार के युद्धों का उल्लेख किया गया है - धर्म युद्ध और कुट युद्ध। युद्ध क्षेत्र में भी उच्च स्तरीय आचार संहिता के पालन करने का अनुदेश दिया गया है। ऋग्वेद में विषयुक्त तीरों के प्रयोग का जिक्र किया गया है। स्मृतियों में इस प्रकार के अस्त्रों के प्रयोग का निषेध किया गया है। चीनी यात्री व्हेनसांग ने कहा है कि भारत में युद्ध का पूरे देश पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता था। कौटिल्य ने भी युद्ध के कई प्रकारों का उल्लेख किया है। उसने युद्ध की स्थिति युद्ध के नियम युद्ध संचालन तथा युद्ध संबंधी अन्य बातों तथा संधि,समझौता एवं शांति व्यवस्था पर भी प्रकाश डाला है।

युद्ध एवं विश्व शांति पर कौटिल्य के विचारों का ऐतिहासिक विश्लेषण

युद्ध और शांति के संबंध में भी कौटिल्य के विचार कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। कौटिल्य के अनुसार राजा को विश्व को जितने का विचार रखना चाहिए। विश्व को जीतने से कौटिल्य का तात्पर्य है उस चीज को जीतने से है जिसे भारतीय भारत की प्राकृतिक सीमाओं के रूप में मानते थे; जो हिमालय से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर तक और अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तक

फैला हुआ है। कौटिल्य ने कहा कि संप्रभु शासन का क्षेत्र हिमवत और समुद्र के बीच उत्तर की ओर एक हजार योजन लगभग नौ हजार मील तक फैला हुआ है। कांगले कहते हैं कि भारतीय परंपरा में विश्व विजेता वह नहीं था जिसने भारत की सीमाओं से पार क्षेत्र पर विजय प्राप्त की हो। मौर्य काल में एक सदी से अधिक समय तक तुलनात्मक शांति रही। नरसिंह प्रसाद सिल का कथन है कि कौटिल्य के लिए विश्व विजय विश्व शांति की सच्ची नींव है। कोई राज्य युद्ध में रहे या शांति में यह पूरी तरह से उस राज्य के राष्ट्रीय हित या उसके लाभ पर निर्भर करता है। युद्ध और शांति पर केवल लाभ के दृष्टिकोण से विचार किया जाता है क्योंकि राष्ट्र हमेशा अपने राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य हित में कार्य करते हैं। यहां तक की शांति की स्थिति में भी अचानक युद्ध के समय में बदलने, सहयोगियों के शत्रु बन ने और यहां तक की शत्रुओं के सहयोगी बनने की संभावना होती है।[7] वह कहता है कि राजा को युद्ध का सहारा तभी लेना चाहिए जब वह अपने आप को बलवान पाता है। कौटिल्य के अनुसार बल नाम ही शक्ति है और शक्ति अर्थात बल के तीन प्रकार होते हैं ज्ञान बल, कोष बल और विक्रम बल। उनका कहना है कि यदि एक राजा इन तीनों शक्तियों से युक्त होगा तभी वह श्रेष्ठ होगा अतः राजा को चाहिए कि वह निरंतर अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहे। कौटिल्य के ग्रंथ अर्थशास्त्र में वर्णित तीसरे मुख्य विषय का संबंध युद्ध तथा राजनीति से है। अर्थशास्त्र के सातवें खंड में कौटिल्य ने राज्य की नीतियों को छः भागों में बाँटा है- 1.शांति 2. युद्ध 3. उदासीनता अथवा तटस्थता 4. हमले की तैयारी 5. संधि अथवा एक दूसरे का संरक्षण 6. एक के साथ संधि और दूसरे के साथ युद्ध।[8]

कार्ल वॉन क्लॉज़विट्ज ने कहा था कि युद्ध घरेलू राजनीति का ही विस्तार है जबकि कौटिल्य ने तर्क दिया था कि कूटनीति वास्तव में युद्ध का एक सूक्ष्म कार्य है जो शत्रु को कमजोर करने और अपने लिए लाभ प्राप्त करने के लिए की गई कार्यवाहियों की एक श्रृंखला है और इसका अंतिम लक्ष्य विजय की ओर होता है। एक राष्ट्र की विदेश नीति में हमेशा युद्ध की ओर प्रारंभिक चालें शामिल होनी चाहिए अर्थात विजेता राष्ट्र को अपने हित में पीछे और सामने एक चक्र स्थापित करना चाहिए। उसे सदैव दूत और गुप्तचर तैनात करना चाहिए, प्रतिद्वंदियों का मित्र बनते हुए बार-बार प्रहार करते हुए गोपनीयता बनाएं रखना चाहिए। कौटिल्य की विदेश नीति में कूटनीति और वार्ता द्वारा स्थापित शांति के समय में भी राजा को गुप्त रूप से बार-बार प्रहार करते रहना चाहिए।[9]

कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक ऐसा मिल का पत्थर है जिसकी मिसाल न केवल भारतीय व्यवस्था में ही नहीं है बल्कि अपितु पाश्चात्य जगत में भी दी जाती है। यह ग्रंथ उन सभी निराधार भ्रांतियां का जवाब है जो राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में भारतीय विचारकों के महत्वपूर्ण योगदान को जानबूझकर करती है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र को एक ज्ञान की एक ऐसी शाखा का दर्जा दिया है जो न केवल शृंखलाबाद और व्यापक थी बल्कि बौद्धिक और विश्लेषणात्मक भी थी। उनका अर्थशास्त्र केवल राज्य के स्वरूप और लक्ष्य का ही वर्णन नहीं करता अपितु राज्य के आंतरिक प्रशासन एवं वैदिक संबंधों के लगभग समस्त पहलुओं को विस्तृत और व्यवस्थित वर्णन प्रस्तुत करता है जो हर काल एवं परिस्थिति में प्रासंगिक है।

1. प्राचीन काल में युद्ध नीति - कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में विभिन्न राज्यों के बीच पारस्परिक संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से मंडल सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। कौटिल्य से पूर्व मंडल सिद्धांत आचार्य कणिक ने अंतर्राज्य संबंधों के संदर्भ में कई प्रमुख सिद्धांतों का उल्लेख किया है। उसके अनुसार युद्ध की अपेक्षा कूटनीति के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनी चाहिए तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए साम, दाम, दंड तीनों प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए। नारद ने भी विदेशी राज्यों के साथ संबंध स्थापित करने के कई तरीकों का उल्लेख किया है। कौटिल्य ने कणिक और नारद दोनों के सिद्धांतों को मिलाकर मंडल सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। प्रोफेसर आर.के. चौधरी के शब्दों में, "कौटिल्य का गतिशील मंडल सिद्धांत भारतीय कूटनीति के सिद्धांत में एक अनुपम और महत्वपूर्ण देन है।"[10]

2.कौटिल्य का मंडल सिद्धांत - कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में मंडल का अर्थ है राज्यों का वृत। कौटिल्य ने विजिगीषु को ध्यान में रखकर मंडल की रचना की है। मंडल सिद्धांत के द्वारा कौटिल्य ने इस विषय की विवेचना की है कि विभिन्न राज्यों के बीच किस प्रकार का संबंध स्थापित किया जाना चाहिए। कौटिल्य एक ऐसे वृत की कल्पना करता है जिसमें छोटे बड़े अनेक राज्य हो और इन्हीं राज्यों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए उसने विजिगीषु को केंद्र में रखकर मंडल सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। मंडल सिद्धांत कौटिल्य के विदेश नीति का प्रमुख आधार माना जाता है। प्राचीन भारत में एक चक्रवर्ती राजा उसे कहा जाता था जो अपनी पराक्रम, वैभव, सैन्य शक्ति और युद्ध कौशल के द्वारा पड़ोसी राज्यों को अपने आधिपत्य स्वीकार करके विवश कर देता था। कौटिल्य के मंडल सिद्धांत का उद्देश्य राजा को दिग्विजय बनाना था। उसने इस परिप्रेक्ष्य में चंद्रगुप्त मौर्य को उतारने का प्रयास किया। अपने पड़ोसी राज्य पर विजय प्राप्त कर अपने शासन का विस्तार करने वाले राजा को कौटिल्य ने विजिगीषु की संज्ञा दी। मंडल सिद्धांत के अंतर्गत राज्य को चार श्रेणी में रखा गया है - शत्रु, मित्र, मध्य और उदासीन। इन राज्य में से प्रत्येक राज्य का एक मंडल होता है जिसमें राजा का शत्रु राज्य, राजा का मित्र राज्य और राजा का उदासीन राज्य होते हैं। मानव धर्मशास्त्र

में भी मंडल सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है। मनु ने भी राज्य को इन्हीं चार श्रेणियां में विभाजित किया था।[11] कौटिल्य का मंडल बारह राज्यों का वृत्त है - विजिगीषु, अरि, मित्र, अरि-मित्र, मित्र-मित्र, अरिमित्र-मित्र, पाषणीग्राह, आक्रांद, पाषणीग्रहसार, आक्रंदासार, मध्यम और उदासीन। (अर्थशास्त्र षष्ठ अधिकरण अध्याय 2) विजिगीषु, अरि, मित्र, अरि-मित्र, मित्र-मित्र, अरिमित्र-मित्र विजिगीषु के सामने वाले राज्य होते हैं। पाषणीग्राह, आक्रांद, पाषणीग्रहसार और आक्रंदासार यह चार राज्य उनके पीछे रहते हैं। शेष दो राज्य मध्यम तथा उदासीन बगल में कहीं भी रह सकते हैं। कौटिल्य ने राज्य और राजा दोनों को एक ही रूप में देखने का प्रयास किया है। इस बात की पुष्टि अनेक विद्वानों द्वारा की गई है कि कौटिल्य ने अपने मंडल सिद्धांत में राज्य और राजा को एक ही मानकर उनके गुण एवं लक्षण बताए हैं। कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की अपनी विशेषताएं हैं, परंतु इसकी कुछ सीमाएं भी हैं और आलोचना भी की गई है, लेकिन इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता है आज भी इस सिद्धांत की प्रासंगिकता विश्व स्तर पर देखने को मिलती है। कौटिल्य के इस सिद्धांत के अनुसार पड़ोसी देशों के साथ शत्रुवत संबंध स्थापित होने की स्थिति में हम भारत-चीन संबंध, भारत-पाकिस्तान संबंध, भारत-बांग्लादेश संबंध, पाकिस्तान-अफ़गानिस्तान संबंध को इस श्रेणी में रख सकते हैं। मध्यम राज्य के रूप में अमेरिका का उदाहरण तथा उदासीन राज्य के रूप में स्वयं भारत का ही उदाहरण देख सकते हैं। कौटिल्य का मंडल सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय संबंध और विदेश नीति के क्षेत्र में आज भी महत्वपूर्ण है।[12]

3. षडगुण्य नीति - कौटिल्य के विदेश नीति को षडगुण्य नीति भी कहा जाता है जो मंडल सिद्धांत के साथ-साथ जुड़ी हुई है। अर्थशास्त्र की सप्तम अधिकरण में कौटिल्य ने वैदिक नीति संबंधी अपने विचार को षडगुण्य सिद्धांत द्वारा प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार किसी राज्य की वैदिक नीति मुख्यतः छः प्रकार की होती है- संधि, विग्रह, यान, संश्रय और द्वैधिभाव। वातव्याधि के अनुसार, वैदिक नीति सिर्फ दो प्रकार की होती है - संधि और विग्रह की, परंतु कौटिल्य ने छह प्रकार की नीतियों पर बल दिया है क्योंकि विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न नीतियों का अनुसरण करना आवश्यक हो जाता है। उसने षडगुण्य नीति को परिभाषित भी किया है। उसके अनुसार, कुछ शर्तों के आधार पर दो राजाओं में परस्पर मेल हो जाने को संधि कहते हैं या शांति की नीति होती है। जब दो राजा परस्पर शत्रुता की नीति अपनाते हैं तो उसे विग्रह कहते हैं। जब कोई राजा उदासीन और शांत होकर चुपचाप बैठ जाता है और किसी अन्य राज्य पर चढ़ाई करने की योजना नहीं बनता तो उसे नीति को आसान कहते हैं और जब कोई राजा दूसरे राज्य पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करता है तो उसे यान कहते हैं। संशय या भय से किसी शक्तिशाली राजा की शरण में चला जाना संशय कहलाता है। जब एक ही समय में एक राजा से संधि करना और दूसरे राजा से विग्रह की नीति अपनाई जाए तो उसे द्वेदीभाव कहते हैं। इसके साथ ही साथ कौटिल्य इस बात की भी चर्चा करते हैं कि किस स्थिति में एक राजा को किस गुण को अपनाना चाहिए। उनके अनुसार शत्रु की तुलना में अपने को कमजोर समझने पर संधि कर लेनी चाहिए तथा बलवान समझने पर विग्रह कर लेना चाहिए; यदि राजा को अपने और अपने शत्रु के बल में अंतर समझ नहीं आता हो तो आसान को अपनाना चाहिए और यदि वह शत्रु की अपेक्षा अपने को शक्ति संपन्न समझे तो यान कर देना चाहिए और यदि शक्तिहीन हो तो संश्रय का सहारा लेना चाहिए और यदि वह दूसरे राज्य से सहायता की अपेक्षा करता है तो उसे द्वैधिभाव की नीति अपनानी चाहिए।[13]

4. उपाय - कौटिल्य ने विदेश नीति की सफलता के लिए षडगुण्य मंत्र के साथ-साथ उपाय भी बताए हैं। कौटिल्य ने षडगुण्य की छह नीतियों के अलावा चार उपाय का उल्लेख किया है यह उपाय हैं - साम,दाम, भेद और दंड। इन उपायों का उद्देश्य शत्रु को अपने वश में करना है। यदि शत्रु राजा दुर्बल हो तो उसे साम और दाम की नीति के द्वारा वश में करने का प्रयास करना चाहिए, परंतु यदि वह बलवान हो तो विजिगिषु उसे भेद और खंड के माध्यम से अपने अधीन करने की चेष्टा करें। इन चारों उपाय एवं षडगुणों में बहुत समानताएं हैं जैसे कि साम संधि का ही प्रतिरूप है और दंड विग्रह तथा यान से मिलता जुलता है। इन उपायों का प्रयोग केवल बाहरी शत्रु को वश में करने के लिए ही नहीं बल्कि आंतरिक क्षेत्र में राजकुमार, बंधु, सेना, जनपदवासियों जैसे लोगों को वश में करने के लिए भी किया जा सकता है। वैदिशिक क्षेत्र में इन उपाय का प्रयोग गौण रूप से ही किया जाता है। कौटिल्य का मत है की साम दाम से और दाम भेद से एवं भेद दंड से श्रेष्ठ होता है और साथ ही यह कहा कि किसी विशेष स्थिति में कोई एक निश्चित उपाय ही उपयुक्त हो सकता है।[14] कौटिल्य कहते हैं कि जब शक्तिशाली राज्य पड़ोसी राज्य को कमजोर कर चुका है तो राजा को उससे संधि तोड़ लेनी चाहिए। उसकी दृष्टिकोण में किसी भी राजा के सामने दो प्रकार के राज्य होते हैं पहला, वह कमजोर राज्य जो नष्ट किए जाने योग्य हैं और दूसरा वे शक्तिशाली राज्य जिन्हें लंबे समय में केवल गुप्त रूप से परेशान किया जा सकता है और उन्हें कमजोर करने की आशा की जा सकती है। उसने सलाह दी कि परेशान किए जाने योग्य शत्रु और नष्ट किए जाने योग्य शत्रु के बीच नष्ट किए जाने योग्य शत्रु से भूमि का अधिग्रहण बेहतर है क्योंकि नष्ट किए जाने योग्य राजा बिना समर्थन के या कमजोर समर्थन के साथ होने के कारण आक्रमण होने पर खजाना और सेना लेकर भागने की इच्छा रखता है तो उसकी प्रजा द्वारा त्याग दिया जाता है; तो ऐसे शत्रु पर आक्रमण करना सबसे अच्छा है जो असंगठित हो, न कि ऐसे शत्रु पर

जिसकी प्रजा ने स्वयं को गुटों में संगठित कर लिया हो। शांति और वार्ता के समय में कौटिल्य चाहता था कि जासूस और गुप्त एजेंट किसी देश के भीतर विभाजन का फायदा उठाए। उसका मानना है कि किसी भी देश में चार प्रकार के असंतुष्ट प्रजा होती है; क्रोध, भयभीत, लोभी और घमंडी। गुप्त एजेंट को इन चार प्रकार के लोगों को उनके राजा के विरुद्ध कार्य करने के लिए उकसाकर इस विभाजन को और ज्यादा गहरा किया जा सकता है।[15] इन उपायों के महत्व के विषय में आचार्य कौटिल्य की नीति अत्यंत युक्ति-युक्त व व्यावहारिक प्रतीत होती है।

5. युद्ध की स्थितियां - कौटिल्य ने उन परिस्थितियों का भी उल्लेख किया है जिसके अंतर्गत राजा के लिए युद्ध का सहारा लेना आवश्यक होता है। उसके अनुसार यदि राजा अपने को बलवान समझे तो अपने शत्रु से मुकाबला करने में अपने को हर प्रकार से सक्षम माने तो वह युद्ध छेड़ सकता है। कौटिल्य का मत है कि यदि विजिगिषु राजा ऐसी स्थिति में हो कि उसके राज्य में अधिकांश लोग शस्त्र प्रयोग करने में समर्थ और संगठित हों; पर्वत, वन, नदी और दुर्ग से उसका राज्य संपन्न है; उसके राज्य में प्रवेश के लिए केवल एक ही द्वार है; वह शत्रु द्वारा किए गए आक्रमण का वीरतापूर्वक उत्तर देने में समर्थ है; वह अपने राज्य की सीमा के दुर्ग में स्थित होकर शत्रु के कार्यों का नाश कर सकता है; और युद्ध छेड़े जाने की स्थिति में अपने शत्रु के कुछ भागों पर अधिकार जमा सकता है तो ऐसी स्थिति में उसे युद्ध का मार्ग अपनाना चाहिए।[16]

6. युद्ध के प्रकार - कौटिल्य ने तीन प्रकार के युद्धों का उल्लेख किया है -1. प्रकाश युद्ध 2. कूट युद्ध 3. तृष्णी युद्ध

I. प्रकाश युद्ध - प्रकाश युद्ध को धर्म युद्ध भी कहा जाता है कौटिल्य ने कहा कि यदि राजा अपने शत्रु से बलवान हो सभी प्रकार संपन्न हो और सभी प्रकार से शत्रु को पराजित करने की क्षमता रखता हो तो उसे प्रकाश शुद्ध का सहारा लेना चाहिए।

II. कूट युद्ध - कूट युद्ध को कौटिल्य ने निम्न स्तर का युद्ध माना है इसके अंतर्गत छल प्रपंच धोखाधड़ी इत्यादि का सहारा लिया जाता है इसमें शत्रु में आतंक पैदा करना उसके दुर्गा को जला देना आवश्यक सामग्रियों को शत्रु की सेवा तक न पहुंचने देना तथा विपटग्रस्त शत्रु पर आक्रमण करना कूट युद्ध के लक्षण हैं. इसके अंतर्गत कपट उपाय का प्रयोग करने का उल्लेख है। इसके साथ ही इसमें विभिन्न प्रकार के तेल , भस्म, विष आदि के प्रयोग का भी होता है जिसके माध्यम से शत्रु का या तो वध कर दिया जाए या उसे अपंग बना दिया जाए ।

III. तृष्णी युद्ध - तृष्णी युद्ध भी कुट युद्ध का एक प्रकार है जिसके अंतर्गत तेल, भस्म, विष आदि के प्रयोग करने का परामर्श दिया गया है।[17] कौटिल्य ने युद्ध के एक और प्रकार अर्थात् माया युद्ध का भी उसका भी उल्लेख किया है। माया युद्ध के अंतर्गत कौटिल्य ने मुख्यतः छल-कपट द्वारा शत्रु की पराजय के लिए किए जाने वाले कार्यों का उल्लेख किया है।[18] इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि धर्म युद्ध और कूट युद्ध में अंतर है। कौटिल्य ने धर्म युद्ध में आचार संहिता का पालन करने पर बल दिया, वहीं कूट युद्ध में हर प्रकार के नैतिक और अनैतिक साधनों के प्रयोग करने के सिफारिश की।

7. युद्ध के नियम - कौटिल्य ने कूट युद्ध में सभी प्रकार के नैतिक चाहे अनैतिक उपाय एवं साधनों के प्रयोग करने पर बल दिया है, फिर भी उसने युद्ध के कुछ नियमों का भी उल्लेख किया है। कौटिल्य के पूर्व के आचार्य ने भी धर्म युद्ध के नियमों का न केवल उल्लेख किया बल्कि उन्हें शक्ति के साथ पालन करने का अनुदेश भी दिया है। इसी प्रकार कौटिल्य ने भी निर्धारित युद्ध के कुछ नियमों का उल्लेख किया है। उसने युद्ध में विजय होने के बाद विजयी राजा के प्रति किए जाने वाले आचरणों और व्यवहारों का भी स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। उसने कहा है कि विजेता राजा के तीन लाभ होते हैं- नव लाभ, भूतपूर्व लाभ और पित्रय लाभ।[19]

8. युद्ध संचालन और ब्यूहों की रचना - कौटिल्य ने सैन्य जगत में अपनी दक्षता प्रमाणित करने हेतु युद्ध संचालन के लिए विभिन्न विभागों जैसे युद्ध समिति, युद्ध वित्त विभाग, आयुधाकर विभाग, गुप्तचर विभाग, पर राष्ट्र विभाग आदि की स्थापना पर विशेष बल देने के साथ ही उनके उत्तरदायित्व का स्पष्ट विवेचन किया है। युद्ध समिति के संबंध में कौटिल्य का मत है कि राजा को सभी कार्य का प्रारंभ विचार विनिमय अथवा मंत्रणा के साथ करना चाहिए; इसके लिए उसने परामर्शदात्री सभा और युद्ध योजना बनाने एवं नीति निर्धारण करने हेतु युद्ध समिति के गठन पर बल दिया। मौर्य काल में राजा के अतिरिक्त प्रधानमंत्री, युवराज और सेनापति उस परिषद के सदस्य हुआ करते थे। कौटिल्य ने युद्ध संचालन हेतु युद्ध के विभाग की आवश्यकता पर बल दिया और उसने अपने शिष्य चंद्रगुप्त को राजकीय वित्त विभाग की स्थापना का आदेश दिया। इस वित्त विभाग में सैन्य आवश्यकताओं, शस्त्रों, विभाग के सैनिक एवं अफसर आदि के वेतन तथा मृत सैनिकों के परिवार को आर्थिक सहायता पर होने वाले व्यय का लेखा-जोखा की व्यवस्था की। कौटिल्य ने युद्ध संचालन हेतु तीसरा विभाग आयुधागार पर एक पूरा अध्याय लिखकर आयुधागाराध्यक्ष के कर्तव्य पर प्रकाश डालकर अपनी सैन्य प्रतिभा का परिचय दिया है। आयुधागार को शस्त्र निर्माण हेतु कारीगरों की व्यवस्था, उनके देखरेख, शस्त्रों के गणना एवं देखभाल, उनको रखने के स्थान की व्यवस्था, भेद लक्षण, मूल्य आदि का पूर्ण उत्तरदायित्व आयुधागाराध्यक्ष को दिया गया था। उसने कुशल राज्य एवं युद्ध संचालन हेतु चौथे विभाग अर्थात्

गुप्तचर विभाग की स्थापना पर विशेष बल दिया है। उसने तीन प्रकार के राजदूतों का उल्लेख किया है जो हैं निः सृष्टार्थ, परिमितार्थ एवं शासनहर। कौटिल्य के लिए युद्ध संचालन हेतु पांचवां विभाग पर राष्ट्र विभाग है। प्राचीन भारत सैन्य पद्धति के अंतर्गत विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की स्थापना का श्रेय कौटिल्य को ही दिया जाता है। मनु के समान उन्होंने वैदेशिक संबंधों की स्थापना करने के लिए छः प्रकार की नीतियों जिसमें संधि, विग्रह, आसन,यान, संश्रय और द्वैध भाव का विवेचन किया है और विदेश नीति का क्रियान्वित करने के लिए चार उपाय जैसे; साम, दाम, दंड, भेद जैसे उपायों के प्रयोग करने पर बल दिया है। अतः कौटिल्य ने युद्ध संचालन के संबंध में भी अपने विचार प्रकट किए हैं उसने युद्ध संचालन के संबंध में अनेक महत्वपूर्ण बातें बताई हैं जिसमें एक राजा को क्या करना चाहिए और क्या नहीं। प्राचीन भारत के युद्ध शैली में ब्यूह रचना का महत्वपूर्ण स्थान था। शुक्र के अनुसार सेना के दोनों अगले भाग, मध्य भाग और पिछले भाग में ब्यूह बनाए जाने चाहिए। बृहस्पति के अनुयायियों का भी मत है कि अगले दोनों भाग, पिछले दोनों भाग, मध्य भाग और पीछे के भाग में सेना के व्यूह की रचना की जानी चाहिए। कौटिल्य ने दंड ब्यूह, भोग ब्यूह , मंडल व्यूह, संहत ब्यूह, असंहत ब्यूह, प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित ब्यूह आदि अनेक प्रकार के ब्यूहों का उल्लेख किया है और उसके लक्षणों का भी वर्णन किया है।[20]

9. युद्ध संबंधी प्रमुख बातें -

- पैदल, घुड़सवार, रथारोही तथा हाथी पर सवार सैनिकों को युद्ध करने और उनको ठहरने के लिए उपयुक्त स्थल अथवा भूमि का होना अति आवश्यक है।
- कौटिल्य ने युद्ध के कालो अथवा ऋतु का भी जिक्र किया है। उसके अनुसार जो काल या ऋतु अपनी सेना के लिए उत्तम हो और शत्रु सेना के लिए विपरीत हो उसी ऋतु में युद्ध करना चाहिए।
- उसने उचित सैन्य संगठन और उचित प्रशासन पर भी बल दिया है।
- युद्ध में प्रयोग होने वाले विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र का भी उल्लेख किया है और अस्त्र-शस्त्रों को दो भागों में बांटा है चल और अचल।
- अर्थशास्त्र के नवे खंड में आक्रमणकारी की गतिविधियों का वर्णन किया है।
- दसवीं खंड में युद्ध छावनियों, बीमारियों तथा हमले की स्थिति में सैनिकों की रक्षा, धोखेबाजी से किए जाने वाले हमलो और सेना के विभिन्न दलों द्वारा उनका मुकाबला करने की प्रतिबद्धता से संबंधित विषयों का उल्लेख है।
- 12वीं खंड में उन समस्याओं का वर्णन है जिसका सामना एक शक्तिशाली शत्रु के साथ संबंधों में करना पड़ता है।
- 14वे खंड में शत्रु से निपटने के लिए गुप्त और आकर्षक एवं भ्रम पैदा करने वाले तरीकों, शत्रुओं को कष्ट पहुंचाने वाले साधनों, योजनाओं और उपचारों का विस्तार पूर्वक वर्णन है।[21]

कौटिल्य यथार्थवादी चिंतक था इसलिए उसने युद्ध जीतने के लिए विभिन्न विधियां और उपायों का उल्लेख किया है। उसने परामर्श दिया है कि युद्ध का प्रयोग अंतिम साधन के रूप में किया जाना चाहिए जब संधि के सभी मार्ग बंद हो जाए तभी युद्ध का सहारा लेना चाहिए।

10. गुप्तचर दुष्प्रचार या प्रचार का प्रयोग - कौटिल्य युद्ध लड़ने में हिंसा के लगभग किसी भी साधन का उपयोग करने के लिए तैयार था वह चाहता था कि उसका राजा अपने हिंसा को विरोधी राज्य के नेताओं की ओर निर्देशित करें ना की सामान्य लोगों की ओर उसने विस्तार पूर्वक चर्चा किया कि विश्व का प्रयोग कैसे किया जाए लेकिन इसका प्रयोग सत्रों सेनापतियों पर ही किया जाए उसने सलाह दी कि जब सेवा के प्रमुखों को मदिरा दी जाए तो उसमें विष मिलाकर दे देनी चाहिए। कौटिल्य शत्रु राजा की हत्या करने के लिए किसी भी संभावित साधन का उपयोग करने को तैयार था। कौटिल्य के सैन्य रणनीति में एक अन्य उपाय दुष्प्रचार या प्रचार का है जिसे शत्रु सैनिकों का मनोबल गिरने या उन्हें डराने के लिए बनाया गया था। उसके अनुसार गुप्त एजेंट को सैनिकों के पास दूत बनाकर यह कहते हुए प्रकट होना चाहिए कि तुम्हारा किला जला दिया गया है या कब्जा कर लिया गया है, तुम्हारे परिवार के किसी सदस्य द्वारा विद्रोह हो गया है या तुम्हारे शत्रु या मुखिया ने तुम्हारे विरुद्ध विद्रोह कर दिया है इस तरह की अफवाह फैलाकर शत्रु राज्य को संकट में डाल देना चाहिए।[22]

11 .कौटिल्य के तटस्थता की नीति संबंधी विचार - कौटिल्य ने अपनी षडगुण्य नीति के अंतर्गत आसन को एक महत्वपूर्ण तत्व माना है। कौटिल्य ने आसन या तटस्थता के सम्बन्ध में कहा है की तटस्थता का अर्थ है चुपचाप रहना, युद्ध से अलग रहना और युद्ध की अपेक्षा करना। उसकी दृष्टि में तटस्थता राज्य की रक्षा का एक कवच है। जब राजा यह महसूस कर ले कि वह आसन या तटस्थता की नीति को अपनाकर अपने राज्य की रक्षा कर सकता है तब उसे तटस्थता की नीति अपनानी चाहिए। राजा जब

अपने को सभी प्रकार से बलवान और समझे तभी उसे युद्ध का सहारा लेना चाहिए। यदि वह दुर्बल है तो संधि का सहारा ले सकता है। आसन या तटस्थता बीच की स्थिति है, जिसमें राजा ना तो युद्ध के लिए पूर्ण सक्षम होता है और ना ही इतना कमजोर है कि वह संधि का सहारा ले सके। कौटिल्य ने अपने मंडल सिद्धांत में उदासीन और मध्यम राजा की जो अवधारणा प्रस्तुत की है उसे हम तटस्थता के सिद्धांत के रूप में समझ सकते हैं। उसके अनुसार मध्यम और उदासीन राजा विजिगिषु उसके शत्रु से शक्तिशाली होते हैं और वे दोनों पर दबाव डाल सकते हैं। वे युद्ध से अलग रहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर दोनों के बीच मध्यस्थता का कार्य भी करते हैं। कौटिल्य ने मौर्य साम्राज्य की विविधताओं को ध्यान में रखकर ही उदासीन और मध्यम राजा की अवधारणा का प्रतिपादन किया था।

कौटिल्य के तटस्थता को हम तीन रूप में समझ सकते हैं -

क. बिल्कुल विराग की स्थिति ग्रहण करना

ख . अपने हित में विग्रह की स्थिति से अलग रहना

ग . किसी भी प्रकार का कोई उपाय नहीं करना जिससे वह उपेक्षण भी कहलाता है[23]

कौटिल्य ने निम्नलिखित परिस्थितियों में आसन या तटस्थता को अपनाने का परामर्श दिया -

1. यदि विजिगिषु और शत्रु राजा एक दूसरे को हानि पहुंचाने में असमर्थ होकर संधि की इच्छा रखते हों तो विग्रह या संधि करके आसन का अवलंबन लिया जा सकता है।
2. यदि विजिगिषु राजा यह देखें कि वह अपने तथा मित्र राजा की सेवा की सहायता से समान या अधिक शक्तिशाली शत्रु राजा की सेवा को परास्त कर सकता है तो वह विग्रह करके चुप बैठ सकता है।
3. यदि विजिगिषु यह देखें कि उसके अमात्य तथा अन्य अधिकारी उत्साहित हैं और वह उन्नति की ओर अग्रसर हैं तथा अपने कर्मों की रक्षा एवं शत्रु के कर्मों को ध्वस्त करने में भी सक्षम है तो उसे युद्ध की घोषणा करके चुपचाप बैठ जाना चाहिए।
4. यदि विजिगिषु यह देखें कि शत्रु का प्रकृतिमंडल तिरस्कृत, लोभी तथा पारस्परिक कलह से पीड़ित होने के कारण उसके वश में हो जाएगा, तो वह विग्रह करके आसन का सहारा ले सकता है।
5. यदि विजिगिषु यह समझे कि वह विग्रह करके शत्रु के धन-धान्य, पशु, हिरण्य आदि नष्ट कर सकता है, शत्रु के व्यापार को अपने देश में पनपना से रोक सकता है, शत्रु कार्य में रुकावट डालकर अपने मित्र को उपकृत करता कर सकता है तो वह विग्रह करके आसन की स्थिति में जा सकता है। इस प्रकार कौटिल्य का विश्वास है की पूरी ताकत से युद्ध के लिए प्रस्तुत विजिगिषु राजा विग्रह करके आसन का अवलंबन ले सकता है।[24]

उपयुक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य ने तटस्थता की कई परिस्थितियों और उसके कई दृष्टिकोण का उल्लेख किया और उसने यह संकेत दिया कि राजा स्थिति और समय को देखकर किसी भी दृष्टिकोण को अपना सकता है। उसकी षडगुण्य नीति मंडल सिद्धांत के अंतर्गत तटस्थता की जो अवधारणा चित्रित की गई है वह नैतिक या नीतिगत मान्यताओं पर आधारितने हैं बल्कि वास्तविकताओं पर आधारित है। एक यथार्थवादी चिंतक होने के नाते कौटिल्य ने इसे नैतिक नियमों में बांधकर नहीं रखा। कौटिल्य की तटस्थता की अवधारणा को गुटनिरपेक्षता की अवधारणा के रूप में समझ सकते हैं। आज शक्ति संतुलन के लिए भी तटस्थता की नीति अपनाई जाती है, जो कहीं ना कहीं विश्व शांति की ओर इशारा करता है। अनेक वर्षों तक शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए अमेरिका ने यूरोपिय राजनीति से अपने को अलग कर रखा था। कौटिल्य ने भी मंडल सिद्धांत में उदासीन और मध्यम राजा की अवधारणा का प्रतिपादन शक्ति संतुलन के सिद्धांत को ध्यान में रखकर ही किया है।

निष्कर्ष

भारत का पुरातन इतिहास चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या सैनिक हो; कौटिल्य के अर्थशास्त्र के बिना वह अपूर्ण है। प्राचीन भारत के महान कूटनीतिज्ञ आचार्य कौटिल्य ने अपने युद्ध संबंधित विचारों एवं दर्शन को इस अमूल्य कृति में संजोगकर रखा है। विभिन्न प्रकार के सेनांगों, सेना संगठनों, शस्त्रों, युद्ध विभागों, दुर्गों तथा युद्ध कला आदि का सजीव चित्रण कर कौटिल्य ने अपनी अतुल्य प्रतिभा का परिचय दिया है। उसने न केवल मौर्य साम्राज्य की स्थापना और उसका विस्तार में अमूल्य योगदान दिया बल्कि इस काल की पद्धति को विकास की सीमा के चरण बिंदु तक पहुंचा दिया। वह थॉमस हॉब्स की भांति शक्ति में विश्वास करता था। उसका कथन था कि शक्ति बल का स्वामित्व है और बल मन को बदल देता है। इससे स्पष्ट होता है कि कौटिल्य न केवल बाहरी व्यवहार को नियंत्रित करने की शक्ति चाहता था बल्कि अपनी प्रजा और शत्रुओं के विचारों को भी नियंत्रित करना चाहता था।[25]

कौटिल्य दूरदर्शी, कूटनीतिज्ञ एवं सैन्य विरासत थे जिनकी विलक्षण दृष्टि और कुशाग्र बुद्धि से सैनिक क्षेत्र का कोई भी भाग अछूता नहीं है। विदेशी नीति संबंध स्थापित करने में कौटिल्य ने मंडल सिद्धांत, षडगुण्य मंत्र एवं जो उपाय बतलाएं हैं उसकी प्रासंगिकता आज भी हम विश्व राजनीति में देख सकते हैं। युद्ध और शांति एक दूसरे के विपरीत शब्द हैं जिसका इतिहास कई सदियों से चला आ रहा है। भारत के संदर्भ में युद्ध एवं शांति के इतिहास की बात जब हम करते हैं तो हमें ऋग्वेद का वसुदेव कुटुंबकम के श्लोक को भूलना नहीं चाहिए। वहीं दूसरी ओर प्राचीन भारत के इतिहास में कई ऐसे भी उल्लेख है जिनको देखने से लगेगा कि वह युद्ध के पक्ष में है परंतु कुछ ऐसे भी सम्राट आए जिन्होंने युद्ध के स्थान पर साम्राज्य विस्तार के स्थान पर शांति को अपना पहला लक्ष्य माना। प्राचीन भारत में युद्ध एवं विश्व शांति पर कौटिल्य के विचारों के संदर्भ में हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कौटिल्य ने चंद्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनाने के लिए नैतिक अथवा अनैतिक साधनों को स्वीकार करने पर जोर दिया। उन्होंने मौर्य साम्राज्य का साम्राज्य विस्तार हेतु युद्ध का भी समर्थन किया किंतु कई जगहों पर वह राजा को परिस्थिति अनुसार ही युद्ध करने की सलाह देते थे। उनके अनुसार दुर्बल राजा को संधि अथवा तटस्थता की नीति को अपनाने कभी वर्णन किया है। कौटिल्य की तरह आज भी तटस्थता की अवधारणा आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार कार्यरत है। तटस्थता की यह नीति विश्व शांति की ओर इशारा करती है। क्योंकि कौटिल्य ने शांति अथवा विश्व शांति शब्द का प्रयोग नहीं किया किंतु उनके मंडल सिद्धांत के अंतर्गत षडगुण्य नीति एवं षडगुण्य मंत्र से स्पष्ट झलकता है कि कौटिल्य युद्ध के साथ-साथ शांति की भी स्थापना करना चाहते हैं।

वर्तमान विश्व में अशांति चारों ओर फैली हुई है और युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है। चारों तरफ आतंक का माहौल है, लोग डरे हुए हैं ऐसी स्थिति में प्रत्येक देश को मित्रता पूर्वक संबंध स्थापित करते हुए अमन एवं शांति का नारा देते हुए मानवता की भलाई के लिए कदम उठाना चाहिए। कौटिल्य का दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय राजनीति में नैतिकता के बीज बोने का भी कार्य करता है।

सुझाव

कौटिल्य के युद्ध संबंधित विचारों की तुलना मैकियावेली के 'द आर्ट ऑफ वार' से कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. https://en.m.wikipedia.org/wiki/World_peace
2. https://indianhistorycollective.com/war-political-violence-and-rebellion-in-ancient-india/
3. द फाउंडेशन ऑफ़ इंटरनेशनल लॉ पेज न. 41
4. https://www.worldhistory.org/Indian_Warfare/
5. http://www.hindudharmaforums.com/showthread.php?t=969&page=3
6. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/peace-and-brotherhood-the-need-of-the-present-world
7. द जर्नल ऑफ मिलिट्री हिस्ट्री_ 67 (जनवरी 2003): में रोजर बोएशे का लेख, 'कौटिल्यास अर्थशास्त्र ऑन वार एंड डिप्लोमेसी इन असिएंट इंडिया' पृष्ठ संख्या -17 –18
8. शर्मा, बी.एम., शर्मा.रामकृष्ण दत्त, शर्मा सविता, भारतीय राजनीतिक विचारक, 2005, रावत पब्लिकेशंस जयपुर,
9. पृष्ठ संख्या- 119
10. द जर्नल ऑफ मिलिट्री हिस्ट्री_ 67 (जनवरी 2003): में रोजर बोएशे का लेख, 'कौटिल्यास अर्थशास्त्र ऑन वार एंड डिप्लोमेसी इन असिएंट इंडिया' पृष्ठ संख्या - 21
11. R.K. Choudhary : Kautilya's Political Ideas and Institutions, Varanasi 1971 p. 305
12. मानव धर्मशास्त्र अध्याय 7 श्लोक 15.5
13. प्रसाद.डॉक्टर मणिशंकर. कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, प्रथम संस्करण 1998, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
14. झा, डॉक्टर बृजकिशोर, प्रमुख राजनीतिक चिंतक प्रथम खंड, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2011
15. वही
16. द जर्नल ऑफ मिलिट्री हिस्ट्री_ 67 (जनवरी 2003): में रोजर बोएशे, 'कौटिल्यास अर्थशास्त्र ऑन वार एंड डिप्लोमेसी इन असिएंट इंडिया' पृष्ठ संख्या - 22-23
17. प्रसाद.डॉ.मणिशंकर. कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, प्रथम संस्करण 1998, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली पृष्ठ संख्या 122

18. वही पृष्ठ संख्या-122-123
19. चतुर्वेदी, मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक हाउस , जयपुर , 1999 पृष्ठ 117
20. प्रसाद.डॉ.मणिशंकर. कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, प्रथम संस्करण 1998, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली पृष्ठ संख्या 117-119
21. वही पृष्ठ संख्या-120
22. वही पृष्ठ संख्या-120
23. द जर्नल ऑफ मिलिट्री हिस्ट्री_ 67 (जनवरी 2003): में रोजर बोएशे का लेख, 'कौटिल्यास अर्थशास्त्र ऑन वार एंड डिप्लोमेसी इन असिएंट इंडिया' पृष्ठ संख्या - 33-34
24. प्रसाद.डॉ.मणिशंकर. कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, प्रथम संस्करण 1998, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली पृष्ठ संख्या 122
25. वही पृष्ठ संख्या- 122-123
26. द जर्नल ऑफ मिलिट्री हिस्ट्री_ 67 (जनवरी 2003): में रोजर बोएशे का लेख, 'कौटिल्यास अर्थशास्त्र ऑन वार एंड डिप्लोमेसी इन असिएंट इंडिया' पृष्ठ संख्या -15